ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

खंड VII अंक II

मई, 2015

इस अंक में:

- लखनऊ में कृषि उद्यमी के कुक्कड पालन फार्म में नीति निर्माताओं का दौरा।
- इस माह के कृषि उद्यमी : श्री. दिनेश कुमार
- इस माह का संस्थान : एसपीएम द्वारा, सोलापुर, महाराष्ट्र द्वारा उद्यमवृत्ति द्वारा विस्तारण,
- ग्रामीण ज्ञान क्रांति के मशाल धारक

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

लखनऊ में कृषि उद्यमी के कुक्कड पालन फार्म में नीति निर्माताओं का दौरा

ऐग्री-क्लीनिक और ऐग्री-बिज़नस केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के भाग के रूप में, श्री माँ गुरु ग्रामोद्योग संस्थान (एसएमजीजीएस), उत्तरप्रदेश, एसी और एबीसी योजना के अंतर्गत एक नोडल प्रशिक्षण संस्थान, वाराणसी और लखनऊ केंद्र के द्वारा अशिक्षित कृषि व्यवसायियों को प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। कुल 4,321 अभियार्थियों को प्रशिक्षित किया गया, जिसमे से 2,404 ने सफलतापूर्वक अपने ऐग्री-वेंचर स्थापित किए है। स्थापित ऐग्री-वेंचरों की ऐग्री-प्रेनेऊरियल गतिविधियों के प्रभावी कार्यान्वयन की निगरानी के लिए नियमित रूप से क्षेत्रों का दौरा आयोजित किया जाता था।

श्री. आशुतोष सिंह, कृषि उद्यमी नीति निर्माताओं से बातचित करते हुए।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार और राज्य कृषि विभाग, यू.पी. ने संयुक्त रूप से एसएमजीजीएस, लखनऊ, उत्तरप्रदेश का दौरा आयोजित किया। श्री.सिराज हुसैन, सचिव, कृषि एवं सहकारिता, भारत सरकार, श्री. अमित मोहन प्रसाद, मुख्य सचिव कृषि, उत्तर प्रदेश, डॉ. आर.के त्रिपाठी, निदेशक कृषि विस्तारण और आईटी, डीएसी, जीओआई, श्री. आदेश कुमार बिशनोई, निदेशक, उत्तर प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कृषि विभाग के अन्य अधिकारियों ने क्षेत्र के दौरे में भाग लिया। श्री.आशुतोष सिंह, एक कृषि उद्यमी जो एसएमजीजीएस, लखनऊ से प्रशिक्षण प्राप्त किया है, उन्होंने एक कुक्कड पालन फार्म स्थापित किया और 18 महीनों के कम समय में मुर्गियों की संख्या को 9,000 से 25,000 तक बढ़ा दिया। उन्होंने वैंचर को विविधरूपायित किया और 10,000 मछली के बच्चों के पालन की क्षमता वाला एक मत्स्यपालन एकक शुरू किया। वें कुक्कड पालन के अपव्ययों से खाद बना रहे है और जैविक कृषि के प्रदर्शन के लिए एक प्रदर्शन खेत तैयार कर क्षेत्र में जैविक कृषि को बढ़ावा दे रहे है।

श्री. आशुतोष ने 5000-15000 मुर्गियों की सीमा वाले छोटे स्तर पर कुक्कड पालन एकक स्थापित कर 20 कृषकों को बाइ-बैक अनुबंध में पंजीकृत किया है। उनके लिए मुर्गी प्रति उत्पादन की लागत रु.63-65/- है जो कुक्कड पालन में अत्यधिक किफ़ायती है। उन्होंने कृषकों के लिए कुक्कड पालन पर 21 दिनों का मुफ्त प्रशिक्षण आयोजित किया था। श्री. सिराज हुसैन और अन्य पदाधिकारियों ने लखनऊ में उनके फार्म का दौरा किया। सचिव, कृषि ने एसी और एबीसी योजना और एसएमजीजीएस के कृषि उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के प्रयासों को सराहा।

सभी के लिए लाभदायक सुअर पालन

श्री. दिनेश कुमार सागर (24), ग्राम गंगापुर, बहापुर, बिलासपुर, उत्तरप्रदेश को सुअर पालन अन्य पशुधन व्यवसाय से ज़्यादा किफ़ायती और संभाव्य लगा। अन्य पशुधन उपक्रमों की तुलना में मुनाफा काफी अच्छा और जल्द मिलता है। अतः, उन्होंने इस व्यवसाय में निवेश करने का निर्णय लिया। कृषि विज्ञान में स्नातकता ने भी उन्हें दो वर्षों तक नौकरी प्राप्त करने में मदद नहीं की। उस दौरान, उन्हें स्थानीय समाचार पत्रों द्वारा एसी और एबीसी योजना के विषय में पता चला। श्री.दिनेश इस योजना के विभिन्न लाभों से आकर्षित हुये; उन्होंने वर्ष 2003 में आवेदन किया और जुबिलेंट ऐग्रीकल्चर डेव्लपमेंट सोसाइटी (जेएआरडीएस), मुरादाबाद, उत्तरप्रदेश में दो माह के मुफ्त आवासीय कार्यक्रम में चयनित हुये। श्री. दिनेश का कहना है कि, "मुझे प्रशिक्षण से पहले सुअर पालन के विषय में कोई ज्ञान नहीं था परंतु लगा की यही समय था किसी पर एक मौका आज़माने का और पूरी तरह से उसमे लिन हो जाने का।

श्री. दिनेश ने सुअर पालन आरंभ करने का निर्णय लेने से पहले बाज़ार का पूरा सर्वेक्षण किया और पाया की स्थानीय बाज़ार में सुअर के मीट की बहुत माँग है। उन्होंने तुरंत 'दिनेश कुमार स्वान फार्म' के नाम से अपना फ़र्म पंजीकृत करवाया। वैंचर की स्थापना रु.20 लाख की पूंजी से की गयी। उन्होंने 450 स्क्वेर फीट के क्षेत्र को 10 खुले कक्षों और दो फेरौंइंग शेड में विभाजित कर पिग पेन का निर्माण किया। उन्होंने लंबे बालों वाले यॉर्कशाइर नसल के 2 बोर (वयस्क) और 10 सौस (महिला सुअर) भी खरीदे। इस बीच, उन्होंने विस्तृत परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत की और अंततः परियोजना स्वीकृत करवा लिया। 100 किलोग्राम का एक परिपक्व सुअर से 70% पोर्क प्राप्त होता है। बाज़ार का दर जीवित सुअर के वजन के आधार पर होता है जैसे रु.80 से लेकर रु.100 प्रति किलो। वर्तमान में, श्री.दिनेश के पास 15 पेरेंट सुअर, अलग-अलग आयु के 35 सुअर के बच्चे और लगभग 39 बिक्रियोग्य सुअर है।

श्री.दिनेश कुमार सागर

श्री.अमर सिंह (32), गंगापुर ग्राम, रामपुर जिले, उत्तर प्रदेश के निवासी का कहना है कि, "हमारे क्षेत्र में सुअर पालन को नीचे दर्जे का व्यवसाय माना जाता था और कोई इसमे शामिल नहीं होना चाहता था। हालांकि, मैं उसी गाँव में रेहता हूँ, मैंने कभी सुअरपालन एकक का दौरा नहीं किया। एक बार जब मेरे पिताजी ने दिनेश के फार्म की सफलता के बारे में बताया, मैंने उसके फार्म का दौरा करने का निर्णय लिया। श्री.दिनेश से बातचित के दौरान मुझे पता चला की सुअरपालन में उच्च आर्थिक प्रतिफल, उच्च पैदावार, और तेज़ विकास दर, पीढ़ी का कम अंतराल, पालन में कम लागत और उच्च ड्रेसिंग प्रतिशत है। इससे प्रभावित हो कर, मैंने उसी फ़र्म से तीन सुअर के बच्चे खरीदे और उनका पालन शुरू किया। आज, मेरे पास लगभग 50 बिक्रियोग्य सुअर है।

श्री.दिनेश का कहना है कि, "पिछले दो वर्षों में, मैंने 100 से अधिक सुअरों का पालन कर उन्हें काटने के लिए भेजा है। एक बार राजस्थान से 200 सुअरों की मांग थी परंतु में इतनी बड़ी मांग को पूरा करने के लिए तैयार नहीं था।, बाद में मुझे एहसास हुआ और मैंने सोचा कि मुझे इस तरह के अवसरों के लिए तैयार रहना चाहिए अतः, मुझे सुअर के छोटे बच्चों को लाकर, उनका पालन कर, उन्हें बेचने के बदले स्वयं के प्रजनन भंडार पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। 'दिनेश कुमार स्वान फार्म' सुअर प्रजनन, सुअर पालन पर प्रशिक्षण, सुअरपालन परियोजना पर परामर्श सेवाएँ, आदि सेवाएँ प्रदान कर रहा है। 10 ग्रामों के 75 कृषकों और ग्रामीण युवाओं को सुअरपालन में प्रशिक्षित किया गया है और उन्होंने व्यक्तिगत एकक आरंभ किए है। इस फार्म का वार्षिक कारोबार रु.30 लाख है। श्री.दिनेश का कहना कि, "भारत में सुअरपालन लंबे समय तक उपेक्षित था और केवल समाज के निश्चित अनुभाग तक ही सीमित था। हालांकि, वर्तमान परिदृश्य में, इसके आर्थिक महत्व और इन पशुओं के पालन और प्रजनन में नई तकनीकों के प्रारम्भ होने को देख कर देश भर के प्रगतिशील कृषकों और युवाओं ने सुअर की खेती शुरू की है। बेरोजगार युवा सुअरपालन द्वारा रोज़ी-रोटी कमा सकते है"।

श्री.दिनेश कुमार सागर

दिनेश कुमार स्वान फार्म, ग्राम: गंगापुरबहापुर, पोस्ट: बिलासपुर, जिला: रामपुर, उत्तर प्रदेश, मोबाइल: 9456422403

सुश्री. अनिता ढोबले,
नोडल अधिकारी

एनटीआई का नाम: श्रीराम ग्रामीण संशोधन एवं विकास प्रतिष्ठान मण्डल (एसपीएम)

पता: श्रीराम प्रतिष्ठान मण्डल, ऐग्री-क्लीनिक और ऐग्री व्यवसाय केंद्र, ए/पी-वडाला, तालुका-उत्तर सोलापुर, जिला-सोलापुर पिन-413222

ईमेल- coordinator-spm@gmail.com, shriram_pratishthan2008@yahoo.co.in

वैबसाइट - www.lokmangaledu.org

प्रशिक्षण कार्यक्रम: 70

प्रशिक्षित अभयर्थी: 2,361

स्थापित वैंचर: 1,166

सफलता दर: 49.38%

गतिविधियों का नाम: ऐग्री-इनपुट, बीज प्रक्रमण, मधुमाखी पालन, कस्टम हाइरिंग, डेरी, कुक्कड पालन, नर्सरी, सुअरपालन, सूक्ष्म पोशाक तत्वों का उत्पादन, खाद्य प्रक्रमण, तेल निष्कर्षण इकाई, कृषि परामर्श, पशु आहार का उत्पादन, आदि

उद्यमवृत्ति द्वारा विस्तारण

"उद्यमवृत्ति द्वारा विस्तारण" केंद्र प्रायोजित एसी और एबीसी योजना की मुख्य संकल्पना है। वर्ष 2010 से, श्रीराम ग्रामीण संशोधन एवं विकास प्रतिष्ठान मण्डल (एसपीएम), महाराष्ट्र के वाडला, रत्नागिरी, उस्मानाबाद और अकोला में स्थित उनके छः प्रादेशिक केन्द्रों; कर्नाटक के बेलगाम, छत्तीसगढ़ के रायपुर के द्वारा एसी और एबीसी योजना का कार्यान्वयन कर रहा है। एसी और एबीसी योजना के कार्यान्वयन को दृढ़ करने के लिए बैंकरों और अन्य स्टेकहोल्डरों के लिए यह संगठन नियमित रूप से कार्यशालाएं, प्रशिक्षण, और सम्मेलन आयोजित करता है। एसपीएम और एटीएमए ने संयुक्त रूप से भंडारकवाते, सोलापुर में "गन्ने में अंतःफसलन और उसके लाभ" पर एक दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया। इस समारोह में उप निदेशक, एटीएमए प्रस्तुत रहे।

एसपीएम और एटीएमए, सोलापुर ने गन्ने के किसानों के लिए सहयोगी कार्यक्रम आयोजित किया।

यह पूरा प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरी तरह से प्रशिक्षार्थियों द्वारा तैयार किया गया था। कृषकों को गन्ने की अन्तः फसलन और संयुक्त गतिविधियों जैसे इनपुट्स को एक साथ खरीदने और कृषि उत्पाद विपणन के विषय में अवगत करवाया गया। कृषक प्रशिक्षार्थियों में से अधिक शोलापुर जिले से थे। प्रशिक्षण के दौरान, कृषक-विशेषज्ञ के बीच बातचीत ने कृषकों को गन्ने की खेती में कठिनाईओं को पहचानने और उसका हल निकालने में मदद प्रदान की।

ग्रामीण ज्ञान क्रांति के मशाल धारक

श्री.वीरेंद्र सिंह (35), एसी और एबीसी योजना के अंतर्गत प्रशिक्षित और एक स्थापित कृषि उद्यमी को उनके 'एंटि-निल जैव-कीटनाशक के आविष्कार के लिए पहचान मिली। यह कीटनाशक खड़ी फसल की नीलगाई (बोसेलाफस ट्रागोंकमेलस) से रक्षा करता है। उन्होंने यह पाया कि नीलगाई खड़ी फसल के फ्रूटिंग हैड को बर्बाद करके फसल खराब करता है जिसके कारण बहुत आर्थिक नुकसान होता है। इस संकट की गंभीरता को पहचान कर, श्री.वीरेंद्र सिंह ने इस संकट का हल ढूंढने के लिए साहित्य का गहन अध्ययन किया। दो वर्ष बाद वो इस नतीजे पर पहुंचे कि औषधीय पौधे इस संकट से निपटने में कुछ हद तक मददगार साबित होंगे। उन्होंने विभिन्न औषधीय पौधों से तेल निकाला और एक जैव-सोल्युशन तैयार किया। उन्होंने इस सोल्युशन से फसलों पर छिटकाव कर प्रयोग किया। उन्होंने पाया कि जैव-सोल्युशन के विशिष्ट गंध ने नीलगाय को खेत से दूर रखने में मदद की। यह जैव-कीटनाशक पूरी तरह से जैविक है और पर्यावरण के अनुकूल भी है अतः प्रयोग के लिए सुरक्षित है। डॉ.एम.एस स्वामीनाथन फ़ाउंडेशन, चेन्नई, तमिलनाडू ने श्री.सिंह के योगदान को पहचाना और उन्हें "ग्रामीण ज्ञान क्रांति के मशाल धारक" के शीर्ष से सम्मानित किया। जमसेटजी टाटा नेशनल वर्चुअल अकादमी ने भी इनकी अमूल्य सेवा के लिए इन्हें अध्येतावृत्ति से सम्मानित किया। श्री.वीरेंद्र सिंह एक कृषि विद्यालय चला रहे है और और कृषि समुदाय को परामर्श और कृषि में प्रशिक्षण प्रदान कर सहायता प्रदान कर रहे है।

श्री.वीरेंद्र सिंह और डॉ.एम.एस स्वामीनाथन फ़ाउंडेशन, चेन्नई, तमिलनाडू

श्री.वीरेंद्र सिंह

पुत्र. श्री. डोरी लाल, ग्राम: चौपारा जनूवी, पोस्ट: भोजीपुरा, जिला: बरेली, -243202, उत्तर प्रदेश

ईमेल: virendrasinghbtm@gmail.com मोबाइल: 9412667062

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबन्धित योजनाओं के ब्यौरों से संबन्धित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों, के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

"कृषि उद्यमी" श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
कृषि-उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंधन संस्थान (मैनेज),
राजेंद्रनगर, हैदराबाद -500 030, भारत
ई-मेल: agripreneur@manage.gov.in

मुख्य संपादक : श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, संपादक : डॉ.पी. चन्द्रशेखर ,सहायक संपादक: डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमति ज्योति सहारे,
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली

अधिकप्रश्नों के लिए कृपया agripreneur@manage.gov.in को संपर्क करें